173 P
660
M
MICROFILM

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY.
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.
1260/10/21
Call No.
Book No. 660

B/19/11

891.431
V191 R

IMPERIAL RECORDS DEPARTMENT

✽ वन्देमातरम ✽

राष्ट्रीय-गीत

[वैद्य की लचारी भाग २]

लेखक व प्रकाशक—

श्री पं० रामकुमार वैद्य,

इजरी, जलालपुर।

मुद्रकः—

श्री पं० किशोरी शरण त्रिपाठी,

श्री केशव प्रेस, जौनपुर।

प्रथम बार १००० | १९४० | मू० एक आना

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 660
Date 16/2/7
GOVT. OF INDIA

कवित्त ॥ १ ॥

नीति चेम्बरलेन की सुयोधन के समान चली,
राजा धृतराष्ट्र के समान मौन मारैंगे।
शकुनी के समान पासा फेंके हैं वायस राय
पाँच पाँच-सात सात-नौ नौ ललकारैंगे ॥
भारत की माता बहिन द्रौपदी बनैंगी यहाँ
पुलिस वाले निर्दयी दुशासन रूप धारैंगे।
सारा धन, धरा, धाम हारि गये भारत वासी,
चार गज की सारी बेइमान अब उतारैंगे ॥ १ ॥
द्रोणी कर्ण विकर्ण अलम्बुक उलूक शल्य,
बनि के भगदत्त तालुकदार पाँव धारैंगे।
बनि के शिखण्डी मुसलिम लीग चली आगे आगे
भीष्म के समान तब महान बीर हारैंगे ॥
पापी कुचाली देशद्रोही औ हरामी सारे,
बनि के सियार मुर्दे घाट में निहारैंगे।
वैद्य कहैं आव पतित पावन मह भारत होइ,
तोहरे बिना घोड़े की बाग कौन मारैंगे ॥ २ ॥

कहरवा ॥ ३ ॥

बहुत दिनन की बोई विष बेली आज फूली औ फली
कांग्रेसियन की टोली जेल में चली ॥ टेक ॥
अन धन सोना नौ लाख जन से, पहिले किहे सहाई।
जलियां वाला बाग के अन्दर डायर दिहेनि बिदाई ॥
वोन चलावैं हम पर गोली ॥ जेल में चली ॥
छोटे २ बच्चा रोकैं किरिच पर ऊपर देंय लोकाई।
माता बहिन खड़ी पाँती से, छाती लिहेनि कटवाई ॥
खेलइं खुनवा कइ होरी ॥ जेल में चली ॥

दाना बिना किसान मरैं धोती बिन फिरैं लुगाई।
वायसराय ऐलान करइं हम समुझन बाद लड़ाई॥
नीति होइगइ विष घोली॥ जेल में चली॥
रोटी माँगे पाथर पाईं देख समय का फेर।
पहिले चल जीति के आव पीछे होई बटोर॥
तब बोलबइ उड सबसे बोली॥ जेल में चली॥
वैद्य कहैं स्वारथ-अग्निया में जलै देश कइ भाग्य।
देश के द्रोही तब अइहैं, जब बुती युद्ध की आग॥
एन बुझइहैं पीछे झोली॥ जेल में चली॥ ३॥

लचारी नं० ४

होइ गै कङ्गाल हो विदेशिअइ के कारन॥ टेक॥
सोने की थाली जहाँ, जेवना जेंवत रहलनि,
कठवाकि डोकिअउ के होइ गै मोहाल हो॥ विदेशि०॥
बनि के डिगम्बर बन में बकरी चरावत रहलैं,
खात रहलैं मछली औ पेड़े कइ छाल हो॥ विदेशिअइ॥
भारत के बच्चे आज दाना विना तरसैं भैया,
लन्दन के कुत्ते उड़ावैं मालामाल हो॥ विदेशि०॥
आवैं अशोक चन्द्र गुप्त तोहरे देशवा में,
आँसू बहावैं जब यइ देखैं तोहरी हाल हो॥ विदेशि०॥
युग २ जीवें उहै गांधी औ जवाहर भैया,
जिन सुरझावैं मोर गरिबवन कि जाल हो॥ विदेशि०॥

लचारी नं० ५

लूटि लेइ गै राम हो विदेशी हमरे देशवा के॥ टेक॥
पन्द्रह करोड़ कै सालाना कपड़ा बनि के भइया,
जाता बङ्गाल से विदेशिन के धाम हो॥ विदेशी०॥
पटने में तैतिस लाख चार सौ छब्बीस माता,

चरखा चलावैं बैठी इहै ओनकर काम हो ॥ विदेशी० ।
शाहाबाद पन्द्रह लाख नव हजार पांच सौ हो,
तागा न टूटै ओनकर बिनहीं से शाम हो । विदेशी० ।
गोरखपुर सत्रह लाख पांच हजार छः सौ चरखा,
पैंतीस लाख रूपया मिलै कपड़े कै दाम हो ॥ विदेशी० ॥
नव लाख दिनाज पुर औ दस लाख पुरइनियां में हो,
जानै न विदेशी जब कि कपड़ा क नाम हो ।' विदेशी० ॥
बीनइ किनारी सब के हमहीं सिखाये भैया,
गुरू न बतावैं कहैं काला गुलाम हो ॥ विदेशी० ॥
वैद्य कहैं चरखा चलाव अब किसानउ भैया,
होइ जाई विदेशियन कै मील सारी जाम हो ॥ विदेशी० ॥

लचारी नं० ६

अइब्य हरी मथुरा अब काहे न ॥ टेक ॥
गोरी कैस तुफान उठावै रामा,
भारत की नइया मझधार में पड़ी ॥ मथुरा ॥
वसुदेव देवकी पड़े हैं जेलखनवां में,
कूवलया यहाँ पुलिस खड़ी ॥ मथुरा ॥
राजा नौव्वाब यहां मुष्टिक चाणूर बने,
काला कानून यहां यमुना बढ़ी । मथुरा ॥
लाखों सुदामा बइठल रहिया अगोरइ तोहरी,
उनकी मड़ैया कहिया महल बनी ॥ मथुरा ॥
बन २ घूमैं तोहरे राजा युधिष्ठिर,
दुर्योधन शिर छत्र चढ़ी ॥ मथुरा ।
आव कन्हइया महा भारत होई अब,
तोहरे बिना घोड़े की बाग के धरी ॥ मथुरा ॥

पारथ के प्रण अब जात तुम्हारे विना
वैद्य कहैं टेक अब स्वराज पै अड़ी ॥ मथुरा ॥

लचारी नं० ७

रसातल में जाय सजनी हों ऐसन देश ॥ टेक ॥
सात बरिसवा के भोली भाली दुलहिन हो,
साठ कै भर्तार ओनके आगा कइ भाय ॥ सजनी ॥
बरिस अट्ठारह के दुलारी धीया देखे भैया,
नौ कै भर्तार बइठल मड़ये उंघाय । सजनी ।
भाई का खून करै भाई एक कूंड़े बदे,
सरबस लूटि के विदेशी धन खाय । सजनी ।
रण्डी नचवैं बदे सौ २ लगावैं भैया,
बिधवा बेचारिन कै केउ न सहाय । सजनी ।

लचारी नं० ८

सत्तरि लाख मुसण्डे साधू जहां,
गांजा उड़ाव नहीं चीलम जुड़ाय । सजनी ।
अन्न विनु अनाथ विधर्मी बनै हो जहां,
सात घड़ा दूधे से पाथर नहाय । सजनी ।
वैद्य कह सत्तर हजार जहां गइया कटैं,
जहां दाम लेइके भोली कन्या बिकाय । सजनी ।

कजली नं० ९

होइ गइलैं अपना बेगाना यहि परदेशिअइ के कारन ।
घिव दही दूध हमके सपना बनवलेनि यही परदेशिअइ के कारन ।
मरैलैं किसान बिना दाना यही । परदेशिया ।
न्याय कइ कराई यहां कोर्ट फीश लागइ यही पर० ।
मागैलैं वकील मेहनताना यही परदेशिअइ के कारन ।

सरबस बेंचि के लगान न दिआइ हो । यही ।
तवनेउ पर बाकी नजराना । यही पर० ।
माँगइ जे स्वराज तेके फांसी लटकवलनि । यही ।
होइ गइलेनि हजारहू दिवाना । यही ।
मोती औ जवाहर आपन फूंकि तापि दिहलेनि । यही ।
भोगलैं हजार दुख नाना । यहि ।
वैद्य कहैं जबसे स्वरजवा न मिलिहैं । यहि पर ।
तब से सुनइबइ गाना । यहि पर देशिअइ के कारण ।

लचारी ॥ १० ॥

अइसन विधान कांग्रेसिअइ बनायेनि हमके ॥ टेक ॥
बाबा के मुये पर बेदखली न होये अब,
पाला पाथर मारी तब न देबइ लगान ॥ कांग्रेसि०
कुंआ खोदइबै और बगिया लगइबइ भैया,
जहां मन होई तहाँ बनइब मकान ॥ काँग्रे०
हरी औ बेगारी दही दूध तरकारी भूसा,
सेंती न देबइ आपन कवनउँ समान ॥ कां०
डखिया मटरिया पर अब कुर्की न होई हमरे,
सहना के सिपाही से बचाइ दिहेनि जान ॥ कां०
खाता अलगइबै और खेतवा बदलबइ आपन,
सुख से बटोरब आपन चपरी औ धान ॥ काँ०
जवने में देबइ सूली वही में कराइबै भैया,
चाहे मचइहैं केतनौं झगड़ा तुफान ॥ कां०
बिना हो रसीद कै लगान न दियाई अब,
वैद्य क लचारी बइठल गावैं किसान ॥ कां०

कहरवा ॥ ११ ॥

बीच भँवर में पड़ी बिनहिं खेवइया,
खेवैं कांग्रेसिये किसनवन क नैया ॥ टेक
सौ सौ बरस बीति गै दुख में सहे अनेक तबइदा,
कितन जेल गे तिक चढ़े फांसी, होय लगी तब कौंसिल की चुनइया।
चौदह वर्ष राह देखे हम खुब लूटेनि लुटवइआ।
राजा बाबू सेठ राय सब, ओटवा लिहेनि मोरि बाँटि के मिठइया
अबकी बार गयेनि कांग्रेसी जातइ किहेन सहइया।
डिगरी कुर्क निलाम मुलतवी घूमै न अमीन न बजावैं डुगडुइया।
अड़तिस अठावन और उनसठ तीनो दफा सफइया।
टूटी लगान कमाइ के देबइ होई न नीलाम घर बरदा ओ गइया
बिना रसीद लगान न देबइ चाहे देयँ दोहइया।
हरो बेगारी नजरि न देबइ जबरी करैंगे तिन भोगिहैं सजैइया ॥खे
अपुना मार मार तोहैं जियायेनि सुन किसानउ भइया।
बैद कहैं हम बाउर रहली खाये न पाये आपनि ये गाढ़ी
कमइया ॥ खेवैं कांग्रेसिये किसनवन कै नइया ॥

लचारी ॥ १२ ॥

लागैलेन चोर हो स्वदेशवा में सजनी रे ॥ टेक ॥
दिन लागइं रात लागइं लागइं बड़े भोरे हो।
एक भैया साँवर बाटैं एक भैया गोर हो। स्वदेशवा ॥
अन धन सोना हमरे गोरे भाइया लूटि लेइगै,
साँवर भइया रात दिना मागतैं अकोर हो ॥ स्वदेशवा ॥
जरजरि नइया मोरे किसान कै पुरानी भइया,
दूनो जने दिहलीन मझधरवइ में बोर हो ॥ स्वदेशवा ॥
गांधी जवाहिर तोहरी नइया कै खेवइया भैया,

पन्त के थम्हाइ दिहलैं गुनवां कै डोर हो ॥ स्वदेशवा ॥
गीदड़ उलूक सारे बिल में लुकइलेनि भैया,
सूरज स्वराज का अब होइगैं अंजोर हो ॥ स्वदेशवा ॥
घर के पहरुआ तोहरे कौंसिल में जागिन भैया,
वैद्य कहैं होई अब दुखया कइ भोर हो ॥ स्वदेशवा ॥

कहरवा ॥ १३ ॥

पर सेवा में आपन जीवन बितावैं,
कवने अपराध हम अछूत कहावैं ॥ टेक ॥
घोसी के लोटा कै दूध पियैं औ सानी में हाड़ बुकावैं।
रबड़ी राखेनि गर्मी होइगै नीसी कै दह ी हिलावैं ॥ कौने० ॥
बोतल बोतल दारू पावैं घासलेट घी खावैं।
विधवा लेइके करइं नहावन पैंडे में पेट गिरावैं ॥ कौने० ॥
तुलसी पेड़ क२ माला पहिरैं खड़ुआ तिलक लगावैं।
न्यायालय में देयं गवाही, झूठैं हलफ उठावैं ॥ कौने० ॥
सात वर्ष की भोली कन्या एक हजार गिनावैं।
येहि मडुअन के लाज न लागइ उई अछूत फेर बताइ के नचावैं ॥
कम तउलैं औ झूठ लिखैं फेरि साहु साहु कहवावैं।
लड़िका होइ अछूतिनि आवै सवरि में दूध पियावैं ॥ कौने० ॥
मर्द विचारे बने पतित, बोन जल भरने नाहिं पावैं।
लेकिन नारि मिलइ जो निर्जन तब करतब दिखलावैं ॥ कौने० ॥
सब कुछ कइके बने चउधुरी नाहिं समाज बिलगावैं।
वैद्य कहइं ये पांव तुम्हारे काहे को गोड़ कटावैं ॥ कौने? ॥

॥ इति ॥

IMPERIAL RECORD
Department